लमही

वर्ष 8 ● अंक : 2 ● अक्टूबर दिसम्बर 2019

इस अंक में

	:	यथार्थ और नवजागरण। : व्यक्ति की महानता। की त्रासद परिणति-कथा : **अमिताभ राय**	5
पड़ताल	:	हिन्दी उपन्यास और आपातकाल : **उन्मेष कुमार सिन्हा**	9
अन्वेषण	:	'सोजे वतन' की ज़ब्ती की असलियत : **डॉ. प्रदीप जैन**	18
शोध-पत्र	:	हरिशंकर परसाई के साहित्य में इतिहास : **अमिता पाण्डेय**	32
परसाई-प्रसंग	:	सात व्यंग्य अनन्त में : **उर्मिल कुमार थपलियाल**	41
सृजन-विमर्श	:	उपन्यास की प्राणधारा : **भरत प्रसाद**	43
पुनरावलोकन	:	शहर जीने नहीं देता, गाँव मरने नहीं देता : **डॉ. क्षमा शंकर पाण्डेय**	47
मूल्यांकन		सामूहिक प्रतिरोध की ताकत : **रामदेव शुक्ल**	50
बातचीत	:	चंद्रकांत देवताले से ओम निश्चल की बातचीत	54
उपन्यास-अंश	:	इकबाल : **जयश्री राय**	57
मानसरोवर	:	चेरी फूलों वाले दिन : **सुषम बेदी**	64
मानसरोवर	:	सुरंग : **प्रेमचन्द सहजवाला**	68
मानसरोवर	:	सिगरेट बुझ गई : **नीना पॉल**	73
मानसरोवर	:	प्रेम न हाट बिकाय : वन्दना शुक्ल	78
मानसरोवर	:	सोशल डेथ : **मनीष कुमार सिंह**	83
मानसरोवर	:	मैच : नीरज शुक्ल	86
मानसरोवर	:	कच्ची पगडंडी : **इन्दुमति सरकार**	92
कविताकीर्ति	:	डॉ. पुष्पिता/95, संजय अलंग/96, वन्दना मिश्र/97, मंजरी श्रीवास्तव/99, प्रतिभा कटियार/102	
कोमल ऋषभ	:	बाबा मैहर वाले : अजय कुमार	104
यात्रा संस्मरण	:	सत्याग्रह हाउस : बापू से साक्षात्कार का एहसास : **स्वाति तिवारी**	107
अध्ययन कक्ष	:	पाप पुण्य से परे द्वारा राजेन्द्र राव : डॉ. भावना शेखर	111
अध्ययन कक्ष	:	कहानियों की भीड़ से अलग कहानियाँ : पंकज सुबीर	112
अध्ययन कक्ष	:	श्रम और संघर्ष की स्वानुभूति का सच 'एक कस्बे के नोट्स' : **अनिल राय**	113
अध्ययन कक्ष	:	स्त्री विमर्श के नए स्वाद की कविताएं : अर्चना	115
अध्ययन कक्ष	:	मीडिया परिदृश्य एक पड़ताल : कृष्णकांत	116
4त्रिक।	:	एक महती प्रयास : **अमिता पांडेय**	119

अमेरिका में चलती है किन्तु स्थापित यही होता है कि मनोविज्ञान कमोबेश वही है, देश भले ही कोई सा भी हो 1 ये कहानी अपनी पूरी सरलता के साथ अपने आप को पाठक से पढ़वा ले जाती है 1 पाठक **बाड़** के बहाने चल रहे विमर्श का पूरा आनंद लेता है और कहानी से जुड़ा रहता है। बाड़ के एक छोटे से प्रतीक को लेखिका ने अद्‌भुत विस्तार दिया है। ये प्रतीक जाने कहाँ कहाँ से गुज़रता है अपने निशान छोड़ता हुआ।

कमरा नंबर 103 बिल्कुल अलग प्रकार की कहानी है। टैरी और एमी के अलावा जो तीसरा **मूक** पात्र मिसेज वर्मा कहानी में उपस्थित है, उसकी ख़ामोशी के संवाद लेखिका ने बहुत सुंदर तरीके से लिखे हैं। ये भी अपने ही प्रकार की एक कहानी है जिसमें एक पात्र भले ही कोमा में है किन्तु संवाद बराबर कर रहा है। उसके संवाद एकालाप की तरह होते हैं। दूसरी तरफ नर्स टैरी और एमी के संवादों के माध्यम से **समस्या** के मूल तक जाने के प्रयास में कहानी लगी रहती है। ये जो दो समानांतर रूप से चल रही घटनाएं हैं ये कहानी को रोचक बनाए रखती हैं। मिसेज वर्मा कोमा में हैं और उस कोमा के पीछे के सच को जानने की कोशिश में लगी हैं टैरी और एमी। कहानी के अंत में मिसेज वर्मा भी इस कोशिश में शामिल होती हैं **मगर** अपने ही तरीके से 1 कहानी मन को छू जाती है।

टारनेडो लेखिका की एक सफल और चर्चित कहानी है 1 ये कहानी भारत से अमेरिका के **बीच** में पेंडुलम की तरह डोलती है 1 और इस डोलने के बीच कई बिंदुओं को छूती है 1 यह कहानी भारतीय परंपराओं की स्थापना की कहानी है 1 लेखिका ने पाश्चात्य जीवन शैली और भारतीयता को एक साथ कसौटी पर कसा है 1 उन्मुक्तता और मर्यादा के हानि लाभों को खोला गया है इस कहानी में I मिसेज शंकर एबनार्मल हैं ये **वाक्य** भारतीयता के बारे में मानो पूरे पश्चिम द्वारा बोला गया वाक्य है 1 बरसों बरस से भारतीयों को एबनार्मल बता कर उन्हें संस्कारित करने का प्रयास पश्चिम द्वारा होता रहा है 1 ये कहानी उन सारे प्रयासों का एक सुदृढ़ तथा सटीक उत्तर है I उत्तर जो उसी भाषा में दिया गया है जिस भाषा में प्रश्न होता है। लेखिका ने अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों का तुलनात्मक पाठ कहानी में प्रस्तुत किया है 1

वह कोई और थी कहानी एक बहुत आम समस्या को अलग तरह से प्रस्तुत करती है। विवाह के माध्यम से अमेरिका की नागरिकता लेना तथा उसके लिये अपने साथी की हर बात को सहन करना 1 ये कहानी का एक पक्ष है, किन्तु, दूसरा पक्ष ये भी है कि यदि ये विवाह नागरिकता लेने के लिये न होकर प्रेम के चलते किया गया हो तो.... ? कहानी ग्रीन कार्ड, अस्थाई नागरिकता जैसे तकनीकी शब्दों के अर्थ कहानी में आम **पाठक** के लिये सरलता से आते हैं 1 ये कहानी एक अलग प्रकार **के पुरुष** विमर्श की कहानी है। **पुरुष** विमर्श, जिस पर चर्चा करने से हर कोई कतराता है 1 समलैंगिकता के बाद पुरुष विमर्श पर कहानी लिख कर लेखिका ने मानो निर्धारित दायरों को तोड़ने की चुनौती को स्वीकार किया है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श नाम पर जो एकपक्षीय **लेखन** पिछले कई दिनों से चल रहा है उसका प्रतिकार है ये कहानी।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने अनोखे विषयों के लिये चर्चित रहती हैं और इस संग्रह की कहानियों में भी वो विविधता, वो अनोखापन है 1 नये और अछूते विषयों को अपनी कहानियों के लिये चुनने की लेखिका की ज़िद उनकी कहानियों को भीड़ से अलग बनाती है 1 और इस संग्रह की कहानियों में भी वो ज़िद लगभग हर कहानी में नज़र आती है 1 .

पता : पी.सी. लैब, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट **बस स्टैंड के सामने,**
सीहोर मध्यप्रदेश 466001
दूरभाष 9977855399 ईमेल : 8ubeerln@gmall.com

कमरा नंबर 105 (कहानी संग्रह), डॉ. सुधा ओम ढींगरा, प्र. हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर, पृ. 95, मूल्य रु. 60/-

श्रम और संघर्ष की स्वानुभूति का सच 'एक कस्बे के नोट्स'

○ अनिल राय

नीलेश रघुवंशी ने कविता, नाटक, वृत्तचित्र आलोचना आदि अनेक विधाओं में अपनी सर्जनात्मक क्षमता द्वारा एक **खास** पहचान बनाई है। इसी कड़ी में उनकी अपनी उपन्यास 'एक कस्बे के नोट्स' है।

आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास **निम्न** मध्यवर्गीय **कस्बाई** परिवारों के **यथार्थ** को बड़ी ईमानदारी के साथ बयां करता है। वस्तुतः कस्बाई जीवन की परिधि इतनी व्यापक होती है कि उसका एक छोर गाँव तक होता है तो दूसरा शहरों से होता हुआ महानगरों तक जा पहुँचता है। यही बजह है कि यह **उपन्यास** विषय-वस्तु एवं **संवेदना** की **व्यापकता** को समेटे हुए **समूचे** उत्तर भारत के निम्न मध्यवर्गीय जीवन का लेखा-जोखा जान **पड़ता है** 1

समीक्ष्य उपन्यास का ताना-बाना मध्य प्रदेश के छोटे से कस्बे गंज बासौदा की पृष्ठभूमि में तैयार हुआ है। मोटे तौर पर उपन्यास के तीन मुख्य केंद्र हैं जिनके इर्द-गिर्द पूरी कथा घूमती चलती है। इसका एक केंद्र लेखिका स्वयं है, दूसरा उसके पिता और तीसरा ढाबा जो न केवल दोनों के श्रम-संघर्ष का साक्षी है बल्कि पूरे उपन्यास की धड़कन का **स्रोत** भी है 1 नायिका के दादा अंग्रेजी शासन में एक सौ पचास बीघा जमीन के मालिक थे 1 तहसीलदार से टैक्स को लेकर हुई कहा सुनी ने विवाद का रुप ले लिया जिसमें उन्होंने तहसीलदार को चाँटा मार दिया। **परिणाम** यह हुआ कि उनकी सारी जमीन नीलाम हो गई 1 किंतु स्वाभिमानी दादा जी ने झुकना स्वीकार नहीं किया।

उपन्यास में नायिका के पिता और स्वयं उसे यही स्वाभिमान विरासत में मिला है। आजीविका हेतु पिता ने गंज बासौदा नामक कस्बे में ढाबा खोल लिया 1 नौ बच्चों सहित ग्यारह **सदस्यों** वाले परिवार का भरण-पोषण पिता के लिए चुनौती भरा काम था, जिसे उसने अपनी **कठिन** साधना एवं **संकल्प के बल पर** स्वीकार किया 1 यहाँ पिता के रुप में नीलेश ने एक ऐसे चरित्र को रखा है जो प्रगतिशील है, घोर कर्मवादी है **श्रम** साधना की भट्ठी में दिन-रात **स्वयं** को झोंके रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि उसे अपने जीवन और **भाग्य** से कोई शिकायत नहीं है। **निम्न** मध्यवर्गीय **मेहनतकश** समाज का वह चेहरा है जो रोज़ी-रोटी के लिए रोज जूझता है तथा अभावों को पराजित करने में की जद्दोजहद

में चौबीसों घंटे लगा रहता है। इसके बावजूद अपने बच्चों के भविष्य को लेकर उसके सपने कम नहीं हैं- "अकेला आदमी ग्यारह आदमी का परिवार चलाता हूँ। किसी चीज की कमी नहीं है मेरे बच्चों को, जान लगा दूँगा इनका जीवन बनाने में।

बस एक बात है साब। रोज कुआँ खोदते हैं और रोज पानी पीते हैं। हमारे पास जमा-पूँजी नाम मात्र की भी नहीं है। क्या दुःखी बीमारी के लिए भी पैसा नहीं बचता हमारे पास।" पिता अपनी आठों बेटियों को पढ़ा लिखाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने तथा उसके बाद ही उनके विवाह की योजना बनाए रखता है जबकि आस-पास का दकियानूसी-समाज लड़कियों को उतना ही पढ़ने की इजाजत देता है। जितना उनके विवाह के लिए आवश्यक हो। इन दोनों ही विचारों की टकराहट पूरे उपन्यास में देखी जा सकती है। सामाजिक दबाव एवं निजी परिस्थितियों ने पिता के सपनों को चकनाचूर करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यहाँ कदम कदम पर पिता को टूटते-बिखरते देखा जा सकता है। वह अपनी बड़ी बेटियों को वैसा नहीं बना पाया जैसा बनाने का सपना पाले हुए था। कुछ न कर पाने की पीड़ा पिता को रात-दिन सालती रहती है। उसकी निराश सूनी आँखों में उम्मीद की एक किरण बेटी बबली (नायिका) है। जो उसे निराशा और अवसाद के गहरे अंधकार से अंततः बाहर निकाल लाती है।

'एक कस्बे के नोट्स' में पिता के चरित्र को केवल परिवार तक ही सीमित नहीं रखा गया है। उसका अपने देशकाल व समाज से गहरा सरोकार है। वह बिजली-पानी जैसे संसाधनों का प्रयोग जरुरत भर ही करने की पूरे परिवार को नसीहत देता रहता है ताकि किसानों के अभावों को कुछ हद तक पूरा किया जा सके। कस्बे में अतिक्रमण विरोधी दस्ते द्वारा ढाबे के आस-पास की दुकानों को तोड़ देने के बाद सभी ग्राहकों के ढाबे पर उमड़ पड़ने से उसे कोई खुशी मिलती - "लेकिन इस तरह धंधे का चलना खुशी न देता। चारों ओर मलबे पर बैठे अपने लोग और बीच में चलता ढाबा। ऐसा लगता नदी के उस पार का विश्राम घाट बस-स्टैंड पर आ गया और हम उसी घाट पर ढाबा चला रहे हैं।"

उपन्यास का दूसरा मुख्य केंद्र वह ढाबा है जो शुरु से अंत तक कस्बे की हर छोटी-बड़ी घटना का गवाह बनता है। यह ढाबा पिता के स्वाभिमान, कठिन श्रम-साधना, स्वप्नदर्शिता, बेटियों के बचपन से विवाह तथा बेटे के व्यवसायगत असंतोष एवं विद्रोह का मूक साक्षी है। यह ढाबा अस्सी व नब्बे के दशक में गंज बासौदा जैसे छोटे-छोटे कस्बों के तेजी से हो रहे शहरीकरण की प्रक्रिया को भी देखता-भोगता है। कस्बे का यह पारिवारिक ढाबा पूरे कस्बे का सांस्कृतिक केंद्र है जहाँ खेती-बाड़ी, व्यापार उद्योग, सूखा-बरसात, देशकाल एवं राजनीति पर खुलकर बहसें होती हैं। अनाज मंडी की रौनक के साथ ही ढाबे की रौनक भी बढ़ जाती है। गाँव से अनाज लेकर आए किसानों का सपना अनाज मंडी में पूरा होता है। इसीलिए उनकी खुशियों का 'सेलीब्रेशन प्वाइंट' भी यही ढाबा बनता है। इस सेलीब्रेशन में गाँवों और कस्बे के बीच की खाई पूरी तरह पटती हुई दिखाई देती है। लेखिका ने कस्बे के इस ढाबे को गाँव की पाठशाला माना है। इस ढाबे को माँ, बाप, भाई-बहन सभी मिलकर चलाते हैं किंतु पिता को छोड़कर किसी को इस व्यवसाय पर गर्व नहीं होता। चूंकि यही ग्यारह सदस्यों के परिवार का पेट पालता है और इसी के बल पर सबको अपनी आँखों में सपने पालने का हक मिलता है इसलिए ढाबे के प्रति सम्मान का भाव पूरे परिवार के मन में है।

उपन्यास का तीसरा मुख्य केंद्र नायिका स्वयं है। होश संभालने के साथ ही उसने पिता को ढाबे पर पसीना बहाते देखा है। अपनी बड़ी बहनों की तरह वह भी इस पारिवारिक व्यवसाय में अपने पिता का हाथ बटाती है। ढाबे पर काम करने में उसे शुरु-शुरु में शर्म व झिझक लगती है किंतु पिता के परिश्रम व स्वाभिमान को देखकर सब कुछ बदल जाता है- "पिता हममें एक अजब आत्मविश्वास पैदा कर रहे होते। वे ढाबे को हमारी कमजोरी नहीं मजबूती बना रहे होते। वे अपने काम में शर्म कैसी जैसी बातों से हमारे भीतर एक नई उत्तेजना और ऊर्जा भर रहे होते, जो उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। पिता द्वारा पूरे परिवार को दिया जा रहा यह संस्कार बेटी बबली (नायिका) में सबसे अधिक आया। कस्बे की इस बेटी में शिक्षा के प्रति एक अदम्य आकर्षण और जीवन में कुछ बन जाने का जुनून बचपन से ही दिखाई देता है। इस उपन्यास में अस्सी-नब्बे के दशक के मध्य वर्गीय समाज की वह मानसिकता भी उजागर होती है जो साइंस पढ़ने वाले बच्चों को आर्ट्स पढ़ने वाले बच्चों की तुलना में अधिक तरजीह व आदर देती थी। तत्कालीन समाज की यही धारणा ही थी साइंस की पढ़ाई वह 'मास्टर की' है जो स्वर्णिम भविष्य के द्वार खोल सकती है। नायिका समाज की इस मिथ्या धारणा को ध्वस्त करती हुई आर्ट्स में पढ़ाई जारी रखती है इस मिथ्या धारणा को ध्वस्त करती हुई आर्ट्स में पढ़ाई जारी रखती है। इस संघर्ष-पथ पर उसे विनीता मलिक मैडम जैसी शिक्षिका से प्रेरणा व मार्गदर्शन मिलता रहता है। लक्ष्य-प्राप्ति के लिए घर आए विवाह प्रस्ताव को वह ठुकराकर पूरे परिवार व समाज के कोप व भर्त्सना का शिकार बनती है, किंतु आँखों में सपना टस से मस नहीं होता। नायिका को अपने ऊपर पूरा विश्वास है जिसके बल पर वह अपने लक्ष्य का संधान करने में सफल हो जाती है' लेखिका, नीलेश रघुवंशी ने इस रचना के माध्यम से निश्चित रुप से कस्बाई-ग्रामीण स्त्री समाज के सशक्तीकरण की दिशा में एक ठोस पहल की है।

'एक कस्बे के नोट्स' में नायिका के अतिरिक्त सात बहनें और हैं जो अपनी प्रकृति में भिन्न होती हुई भी परिवेशगत एवं संबंधगत समानता के सूत्र में बँधी हुई हैं। अपने-अपने भविष्य को लेकर सभी के अपने-अपने सपने हैं, अपनी-अपनी नियति है जिसकी परिणति अलग-अलग रुपों में दिखाई पड़ती है। परिवार में एक और नायिका की माँ है जो पारंपरिक मध्यवर्गीय स्त्री-समाज को नुमाइंदगी करती है। उसमें घर के काम-काज के साथ पूजा-पाठ, व्रत-उपवास, तीज-त्यौहार आदि के प्रति पूरा समर्पण है जो पिता के स्वाभाव के ठीक उलटा है। वह निम्न मध्यवर्गीय समाज की माँ है जिसकी समाज व परिवार के लोक-लाज के प्रति जवाबदेही भी है। इसलिए लड़कियों का देर रात तक ढाबे पर काम करना उसे पसंद नहीं है। वह उन्हें घर-गृहस्थी के तौर-तरीके सिखाना चाहती है, किंतु पिता की प्रगतिशीलता के आगे वह मन मसोस कर रह जाती है। यही कारण है कि वह सर्वत्र पतिपरायण ही नहीं दिखाई देती। कभी-कभी वह विद्रोहिणी भी बन जाती है।

दूसरी पुत्री उषा के विवाह में पिता द्वारा वर पक्ष की सूचीबद्ध माँगों को पूरा न कर पाने की बेबसी समूचे मध्यवर्गीय समाज में पुत्रियों के पिता होने के अभिशाप्त जीवन की त्रासदी को व्यक्त करती है। साथ ही हमारे संवेदनहीन समाज का वह खौफनाक चेहरा भी बेनकाब हो जाता है जो विवाह जैसे पवित्र बंधन को व्यापार के तराजू पर चढ़ाता आ रहा है। इस उपन्यास में कस्बाई समाज की वह संकीर्ण मानसिकता भी सामने

जाती है जिसके कारण लड़कियों को तो सरकारी स्कूलों में यह सोचकर पढ़ाया जाता है कि इन्हें कौन सा अफसर बनकर कुल का नाम रोशन करना है। इन्हें तो बस उतना ही पढ़ा-लिखा दो जिससे इनका विवाह हो जाए। दूसरी ओर यही समाज लड़कों को अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों में पढ़ाना जरूरी समझता है, और क्यों न समझे। आखिर उन्हीं कुलदीपकों के कंधों पर परिवार की प्रतिष्ठा व अपेक्षाओं का बोझ भी तो टिका होता है। लेखिका लिखती है- "भैया कॉन्वेंट स्कूल में पढता था।" बेमन से तैयार होता और हिलाए न हिलता बस के आते ही ढाबे पर गोंड़ रास्ता के ढेर पर बैठ जाता।...... ..पिता उसे जबरन बस में बिठा देते ....भैया की पिता ने स्कूल में ही 'ट्यूशन' लगवाई। ट्यूशन के बाद भी वह फेल हो गया।........कॉन्वेंट को लेकर मैं जब तक पिता से लड़ पड़ती। लड़ते-लड़ते एकदम उनके सामने बैठ जाती और बिना पलक झपकाए एक टक उन्हें देखते कहती कक्का तुम भी कम बेईमान नहीं हो। तुमने भैया को कॉन्वेंट में पढ़ाया। हमें क्यों नहीं?"

मध्य प्रदेश के पत्थर खदानों पर खदान माफियाओं के बढ़ते वर्चस्व को भी इस उपन्यास में बेपर्दा किया गया है। छोटे-छोटे किसानों की साधनहीन खेती की लाचारी, बड़े किसानों द्वारा की जा रही अनाजों की कालाबाजारी तथा दवाइयों व हानिकारक रासयनिकों के बल पर प्राप्त की जा रही अप्राकृतिक बंपर पैदावार जैसी कृषि-जगत की अनेक सच्चाइयाँ 'एक कस्बे के नोट्स' में उद्घाटित हुई हैं।

उपन्यास में भाषा की स्वाभाविकता एवं पठनीयता का आरंभ से अंत तक ध्यान रखा गया है। परिवेशगत जीवंतता को बरकार रखने के लिए लेखिका ने स्थानीय बुंदेली भाषा और उसकी लोक-शैली का बेधड़क प्रयोग किया है, किंतु सर्वत्र इस बात के प्रति [illegible] भी बरती है कि स्थानीय भाषाजन्य ठेठपना इस रचना को आंच[illegible] की सीमा में न बाँध सके।

समग्रतः नीलेश रघुवंशी की यह रचना एक क[illegible] बहाने पूरे उत्तर भारत के मध्यवर्गीय समाज को आईना दिखाती जान पड़ती है। लेखिका को कस्बों व छोटे-छोटे शहरों के जीवन एवं रहन-सहन की गहरी पहचान है। इसीलिए इस समाज के सुख-दुख, तीज-त्योहार, रूप-रस-गंध बड़े ही सशक्त तरीके से कथा की पृष्ठभूमि में रचे-बसे हैं।

पता : 75, शुभम अपार्टमेंट्स, 37, इन्द्रप्रस्थ प्रसार,
पटपड़गंज नयी दिल्ली-110092